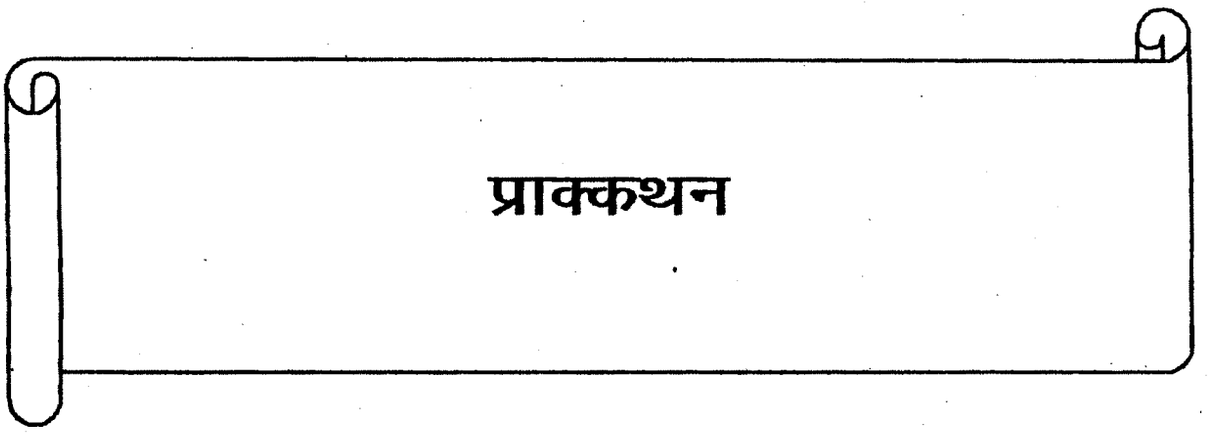

प्राक्कथन

प्रस्तावना

साहित्यकार सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर ही साहित्य सृजन करता है। सामाजिक परिस्थितियों में नारी जीवन अपना एक अलग महत्त्व दर्शाता है, जिसे साहित्यकार अपनी अनुरागात्मक अथवा घृणात्मक भावना से नारी की तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक स्थितियों को अपने साहित्य में चित्रित करता है।

डॉ.रांगेय राघव भी नारी जीवन से प्रभावित हुए दिखाई देते हैं जिससे उनके अधिकतर उपन्यास नारी प्रधान ही हैं । वे प्रतिभासंपन्न तथा प्रगतिवादी साहित्यकार थे। अहिंदी भाषी होते हुए भी उन्होंने हिंदी साहित्य की हर विधा में लेखन कर अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया है। राघव जी ने पुरुष होकर भी नारी के सुख-दुखों का सूक्ष्म निरीक्षण और अध्ययन कर अपने उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत किया है ताकि समाज नारी की स्थिति से परिचित हो सके । अनुसंधान कार्य के लिए मैंने राघव जी के 'राई और पर्वत', 'पतझर', तथा 'कल्पना' उपन्यास चुन लिए हैं जो भारतीय नारी की सद्य स्थिति को दर्शाते हैं।

प्रस्तुत उपन्यासों की नारी विविध रुपों में परिवार तथा समाज में अपना विशिष्ट स्थान प्रस्थापित करती है । परिवार तथा समाज के दबाव के कारण ग्रामीण तथा शहरी-मध्यवर्गीय नारी अपनी इच्छा के विरुद्ध जीवन बिता रही है। इससे भारतीय नारी की त्याग और समर्पण की भावना दिखाई देती है, जो वर्तमान युगीन नारी की वास्तविक स्थिति है। अतः राघव जी ने भी अपने उपन्यासों में नारी का पीड़ित तथा शोषित जीवन दिखा दिया है, जिसके जरिए समाज को सचेत करने का प्रयास किया है। विवेच्य उपन्यासों को पढ़ते समय पाठक को ऐसा लगता है कि यह

अपनी ही कहानी है । नारी के विविध पहलुओं को उन्होंने मार्मिक प्रसंगों के साथ समाज के सामने रखा है। इसीलिए उनका साहित्य प्रभावात्मक रोचक और उद्देश्यपूर्ण बन गया है।

अतः अनुसंधान कार्य की इच्छा के कारण 'राई और पर्वत', 'पतझर' तथा 'कल्पना' आदि उपन्यासों में चित्रित नारी के पीड़ित और संघर्षशील जीवन से मैं प्रभावित हुई जिसके कारण राघव जी के उपन्यासों के प्रति मेरी रुचि बढ़ती गई और उनके उपन्यासों पर अनुसंधान करने का मैंने निश्चय किया ।

संपन्न कार्य -

आज तक राघव जी के साहित्य पर एम्.फिल. उपाधि के लिए निम्नांकित शोधकार्य हुआ है।

(1) 'रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यासों का मूल्यांकन

छाया पाटील (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, मई - 1988)

(2) 'रांगेय राघव के 'कब तक पुकारुँ' उपन्यास में आँचलिकता

जगन्नाथ पाटील (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, जनवरी - 1995)

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि 'रांगेय राघव जी के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन' इस शीर्षक पर अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है। अतः शोध-निर्देशक डॉ.पांडुरंग पाटील जी से सलाह मशवरा कर उपर्युक्त इस विषय पर अनुसंधान कार्य करने का संकल्प किया और कार्य प्रारंभ किया ।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित सवाल उठे –

(1) क्या, राघव जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर असर दिखाई देता है?

(2) क्या, राघव जी नारी के विविध रूपों का चित्रण करने में सफल हुए हैं ?

(3) विवेच्य उपन्यासों में राघव जी का नारी के प्रति दृष्टिकोण कैसा रहा है?

अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने लघु शोध-प्रबंध का निम्नलिखित अध्यायों में विभाजन किया है –

प्रथम अध्याय : रांगेय राघव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

इस अध्याय में राघव जी का जीवन परिचय के अंतर्गत जन्म, नाम तथा बाल्यकाल, माता-पिता और उनके संस्कार, शिक्षा, पारिवारिक जीवन तथा विवाह, अभिरुचि, प्रेरणा, पुरस्कार, मृत्यु और उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं के साथ ही कृतित्व के अंतर्गत विभिन्न विधाओं में लिखी रचनाओं का परिचय दिया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय : रांगेय राघव के उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन।

इस अध्याय में राघव जी के 'राई और पर्वत', 'पतझर' तथा 'कल्पना' उपन्यासों का तत्वों के आधार पर विवेचन किया है ।

तृतीय अध्याय : आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रुप।

इस अध्याय में विवेच्य उपन्यासों में प्रस्तुत नारी के पारिवारिक, परिवारेतर और शाश्वत रुपों को सोदाहरण प्रस्तुत किया है ।

चतुर्थ अध्याय : 'आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन'

इस अध्याय में नारी के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन का विवेचन किया है।

पंचम अध्याय : 'आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याएँ

इस अध्याय में नारी की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक समस्याओं को सोदाहरण प्रस्तुत किया है।

उपसंहार :

उपर्युक्त सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रुप में उपसंहार में प्रस्तुत किया है तथा प्रस्तावना में उठाए गए सवालों के जवाब अनुसंधान की उपलब्धियों के रुप में प्रस्तुत किए हैं । अंत में आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।